गुलाम डेव

कवि, कलाकार और कुम्हार

लेखक : लेबेन हिल

चित्रण : ब्रायन कोलियर

हिंदी : दीपक थानवी

गुलाम डेव

कवि, कलाकार और कुम्हार

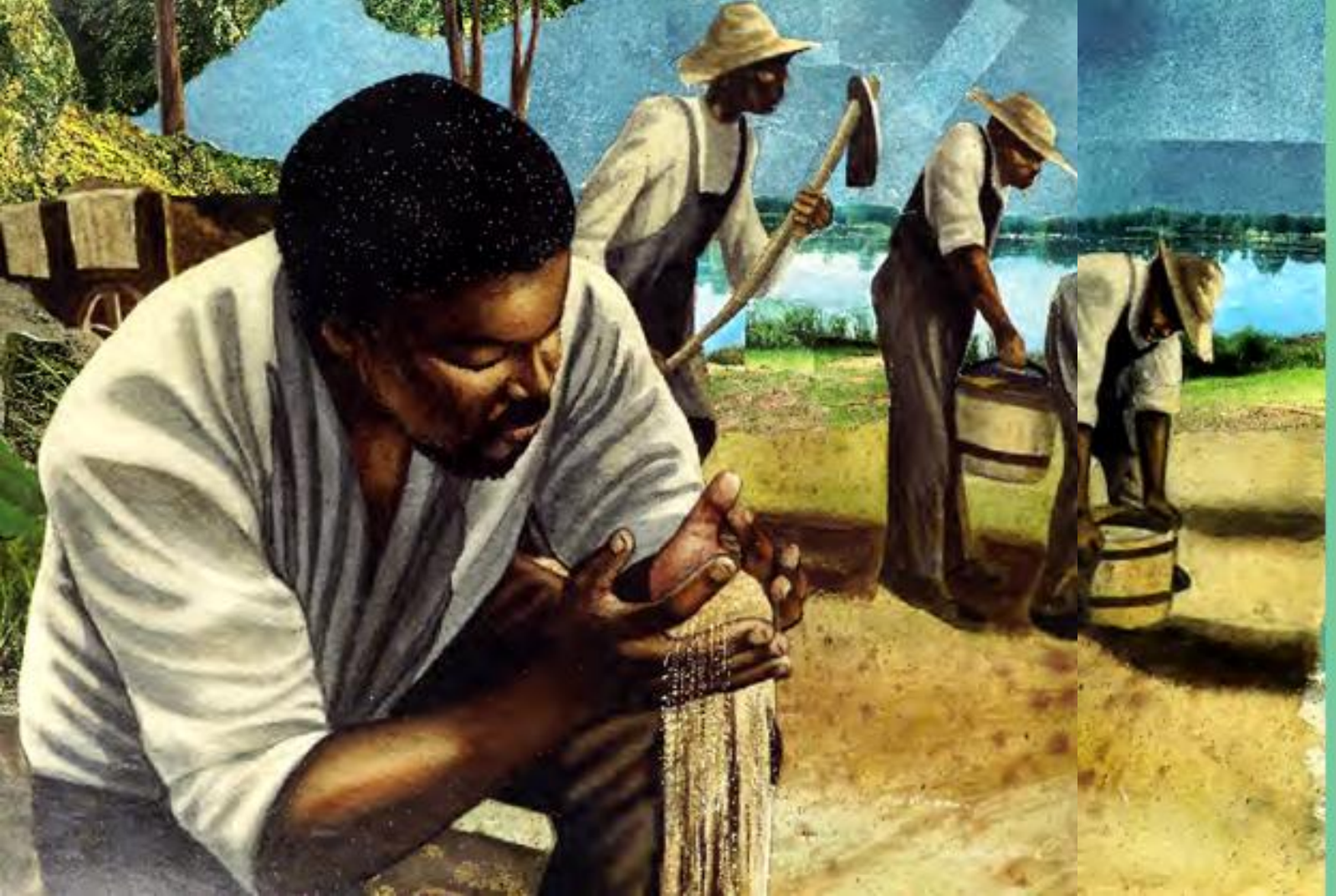

हमारे लिए
यह सिर्फ मिट्टी है,
जिस पर हम चलते हैं।
इसे मुट्ठी भर हाथ में लो।
उसके कण आपकी अंगुलियों
के बीच से सरक जाएंगे।

बरसाती दिनों में,
बारिश का पानी मिल जाने से यह
भारी, ठंडी और नरम हो जाती है।

लेकिन डेव के लिए
यह तो चिकनी मिट्टी थी,
एक उपयोगी और आवश्यक वस्तु।
इसके गुणों से प्रभावित होकर
डेव ने करीब दो सौ साल पहले,
अपनी गुलामी भरी जिंदगी को
आकार देना सीखा था।

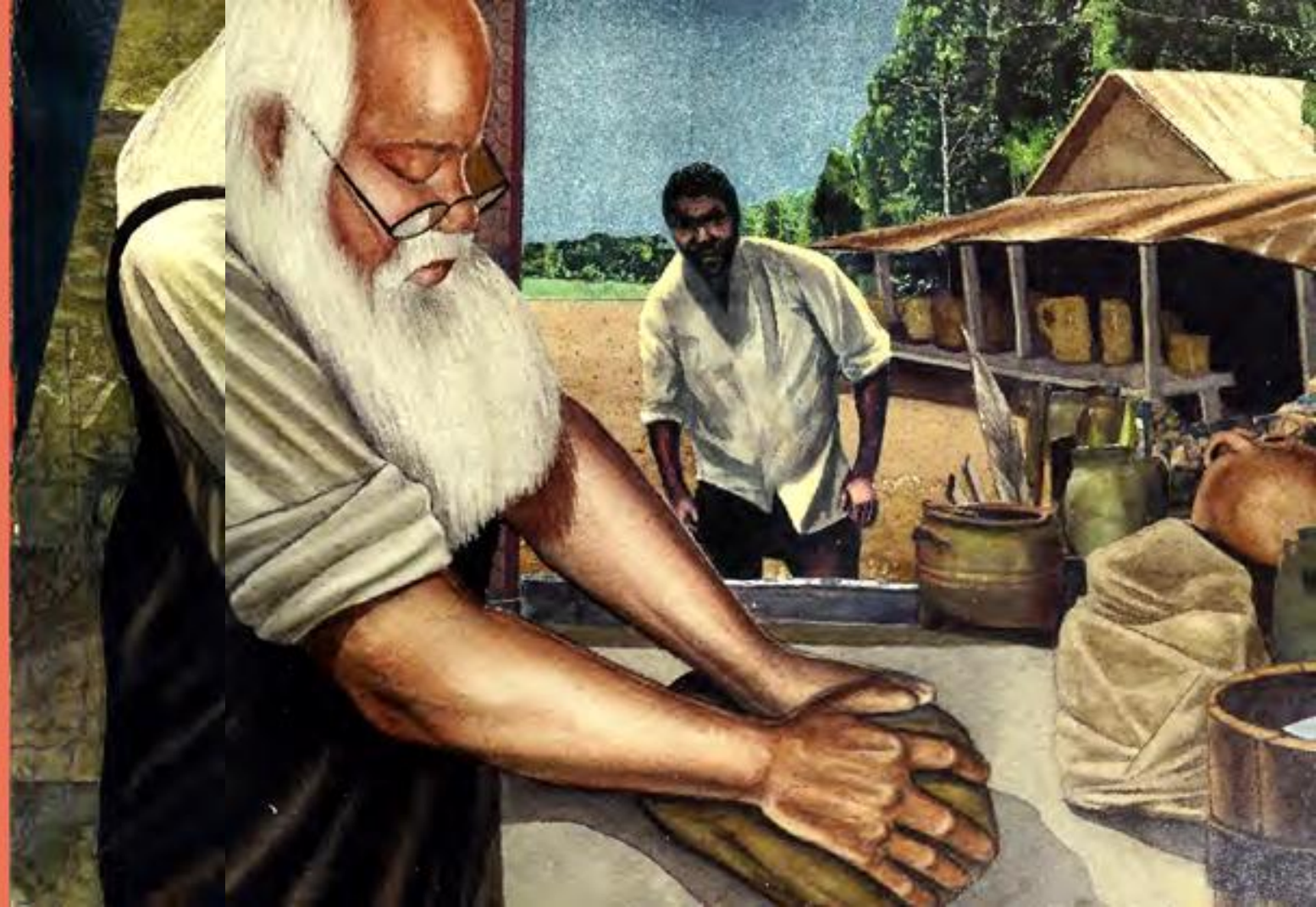

हमारे लिए
यह सिर्फ घड़ा है,
बड़ा और गोलाकार,
जिसमें कंचे या ताज़े
खुशबूदार फूल
अच्छे से
रखे जा सकते हैं।

लेकिन डेव के लिए,
यह एक बड़ा घड़ा था
जिसमें लोग अनाज का
संग्रह कर सकते थे,
मांस के टुकड़ों को
सहेज रख सकते थे,
और स्मृतियों को
कैद कर सकते थे।

काम शुरू हुआ
चिकनी मिट्टी के ढेले से।
हर एक आदमी इन ढेलों को
चक्की में डालता,
निकालता और इन्हें एक ठेले में भर देता।
फिर एक के बाद एक,
वह ठेले को डेव के पास ले जाता।

डेव के पास एक लंबी और सपाट लकड़ी थी।
वह लकड़ी इतनी बड़ी थी कि
नाव को भी अटलांटिक पार करा सकती थी।
डेव उसकी सहायता से,
चिकनी मिट्टी में बिग हॉर्स खाड़ी से
लाया गया पानी मिलाता रहा।
तब तक मिलाता रहा जब तक कि वह
गीली, सख़्त और भारी नहीं बन गयी।

डेव चिकनी मिट्टी के बड़े ढेले को ऊपर फेंकता,
कभी-कभी तीस किलो एक बार में,
और उसके अलावा कोई नहीं जानता था
कि यह कैसे और कहां गिरेगा।

डेव ने अपनी लात से
चाक के पहिये को तब तक घुमाया,
जब तक कि वह
मेले के गोल झूले की तरह तेज़ नहीं घूमने लगा।

जैसे

कोई जादूगर

अपनी टोपी से

किसी खरगोश को

निकालता है,

वैसे ही जब डेव ने
गीली मिट्टी में दबे अपने हाथों को निकाला,
तब घड़े के आकार का बर्तन भी मिट्टी से निकला।

उसके फटे अंगूठे,
घड़े के अंदरूनी हिस्से को दबाते।
साथ-साथ उसकी अंगुलियां घड़े के
बाहरी हिस्से को आकार देती।

जैसे-जैसे चाक का पहिया
गोल-गोल घूमता गया,
वैसे-वैसे घड़े का बाहरी आकार
रॉबिन पक्षी की फूली हुई छाती की तरह बढ़ता गया।
चाक का पहिया तब तक घूमता रहा
जब तक कि घड़ा बहुत बड़ा नहीं बन गया।

घड़ा इतना विशाल बन गया था कि
अब डेव अपनी मजबूत भुजाओं से
भी उसे पूरी तरह पकड़ नहीं सकता था ;
उसे अपनी बाहों में लेकर दुलार भी नहीं सकता था।
अगर वह घड़े के अंदर चला जाता
और गेंद की तरह अपने शरीर को गोल कर देता,
तो निश्चय ही घड़ा उसे
अपनी ममतामयी गोद में बिठा लेता।

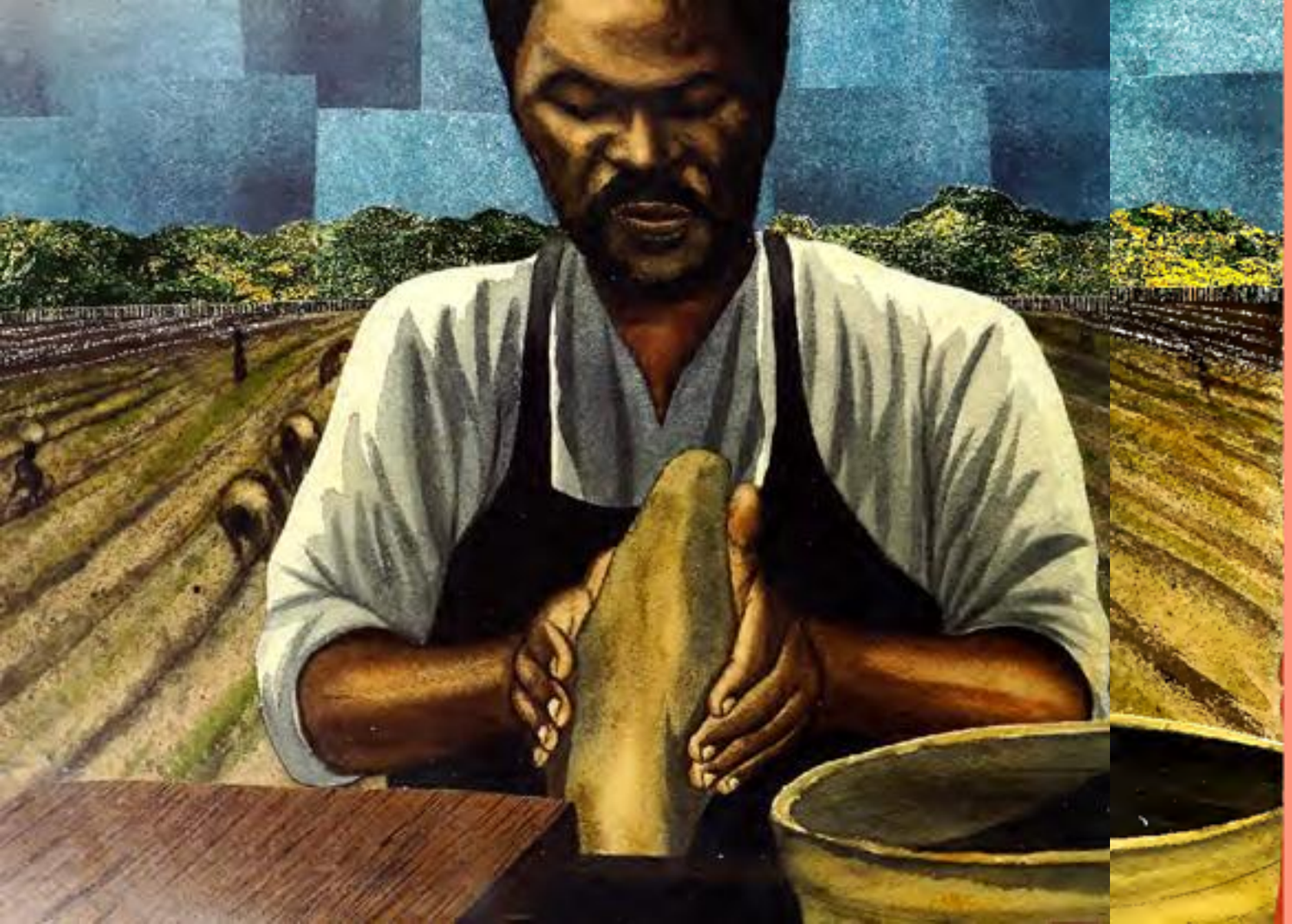

इसके बाद उसने अपने चाक के पहिये को रोका।
और अपनी सूखी व मजबूत हथेलियों से
चिकनी मिट्टी के ढेलों की
लंबी-लंबी रस्सियां बनाने लगा।

डेव इन रस्सियों को
एक-एक करके,
आधे बने हुए घड़े के शीर्ष पर चढ़ाता गया।
वह अपनी गीली अंगुलियों से
रस्सियों का आकार बराबर करता गया।
वह साथ ही अपने पैर की ऐड़ी से
चाक के पहिये को भी घूमाता गया।

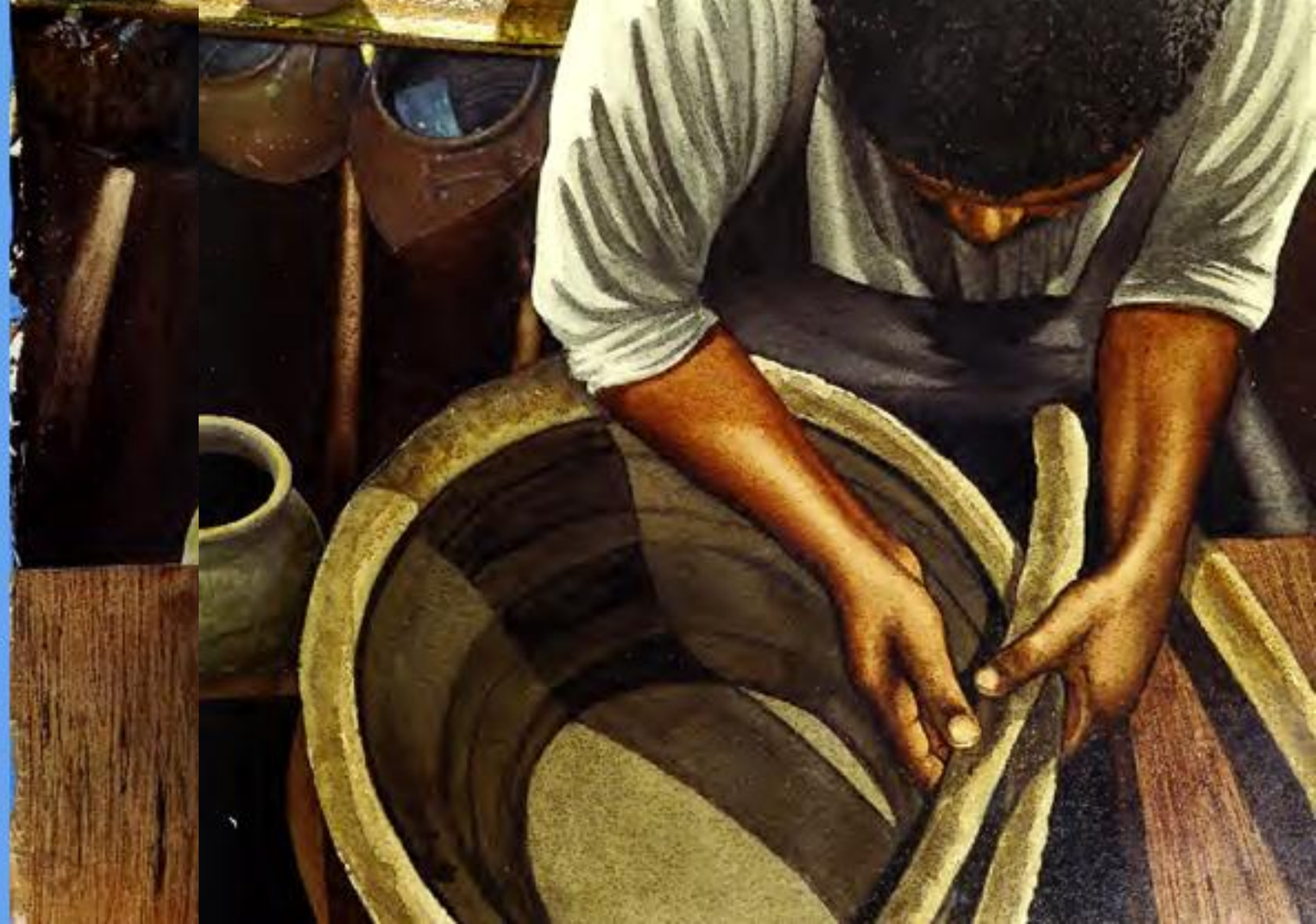

जब घड़ा अपने अंतिम रूप में आ रहा था,
तब डेव के कंधे भी धीरे-धीरे ऊपर उठते गए।
उसे पता था कि घड़ा कितनी ऊंचाई तक बढ़ेगा।
वह यह सब कुछ तब से जानता था
जब मिट्टी का ढेला चाक पर घूम रहा था।

जब घड़े की मिट्टी सूख रही थी,
तब डेव ने रेत और लकड़ी के चूरे को पीसा।
और उनके मिश्रण को
घड़े की सतह पर लगा दिया।
घड़े की सतह भूरे रंग की हो गयी थी।
शीशे की तरह वह ऐसे चमक रही थी
जैसे वह आने वाले समय का सामना कर रही हो।

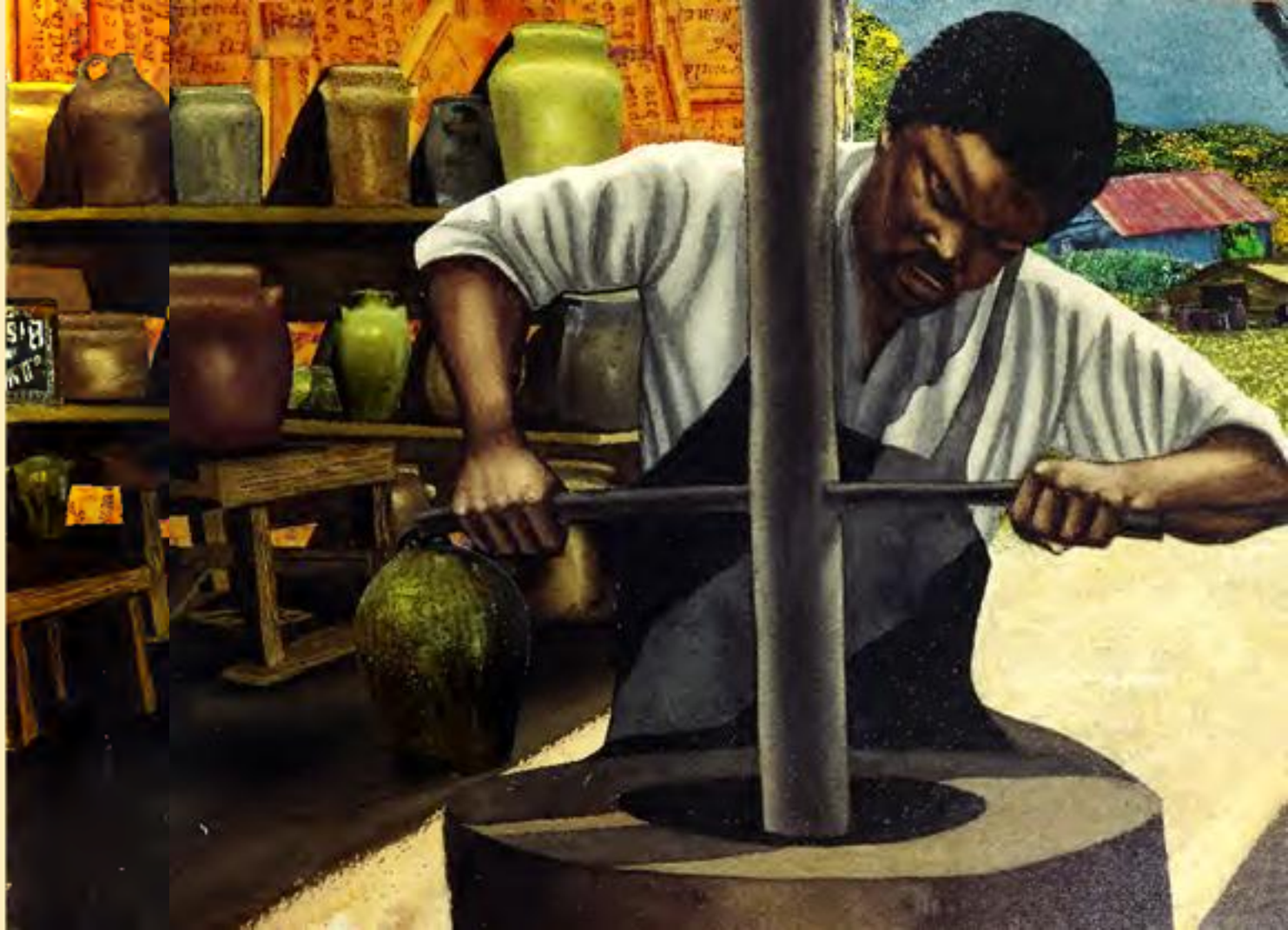

लेकिन इससे पहले कि
घड़ा पूरी तरह सख़्त बनता,
डेव ने एक तिनका लिया और
घड़े पर कुछ लिखा,
यह बताने के लिए कि — वह यहां था।

मुझे आश्चर्य होता है
कि मेरा संबंध —
किन लोगों और देशों से है...